इकाई 12 प्रजाति और नृजातीयता*

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 प्रजाति की परिभाषा

12.2.1 सामाजिक निर्माण के रूप में प्रजाति

12.2.2 प्रजातिवाद

12.3 नृजातीय समूह और नृजातीयता

12.3.1 नृजातीय समूह-परिभाषा और विशेषताएं

12.3.2 नृजातीयता

12.4 नृजातीयता के सिद्धांत

12.4.1 आदिम विचार संप्रदाय

12.4.2 उपकरणवादी विचार संप्रदाय

12.4.3 स्थितिजन्य आदिमवादी संप्रदाय

12.5 प्रजाति और प्रजातीयता में अंतर

12.6 सारांश

12.7 संदर्भ

12.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के माध्यम से आप सक्षम होंगे :

- प्रजाति, प्रजातिवाद के विचार को परिभाषित करना;
- प्रजातीय समूह की परिभाषा और उसकी विशेषताएं बताना;
- नृजातीयता की अवधारणा पर चर्चा करना;
- नृजातीयता के सिद्धांत प्रस्तुत करना; और अंत में; और
- प्रजाति और प्रजातीयता के बीच के अंतर की व्याख्या कर सकेंगे।

12.1 प्रस्तावना

आपने धर्म के मूल विचारों और समाज से इसके संबंध के बारे में सीखा। कैसे भारतीय समाज एक बहुलतावादी समाज है जहाँ लोगों के बीच भाषा, संस्कृति, धर्म आदि के आधार पर मतभेद तिरछी काट बनाते हैं। यहाँ इस इकाई में 'प्रजाति और नृजातीयता' में एक और अंतर आपको समझाया जा रहा है जो भारत की विविधता को दर्शाता है। यह इकाई प्रजाति और नृजातीयता के विचार पर चर्चा करेगी। वर्तमान समय की कुछ सामाजिक घटनाओं का वर्णन करने के लिए इन अवधारणाओं का अक्सर उपयोग किया जाता है। यहां, हम शुरू में प्रजाति और नृजातीयता, प्रजातीय समूह, की विशेषताओं आदि

*डॉ. प्रफुल्ल कुमार नाथ द्वारा लिखित

की शास्त्रीय परिभाषाओं को समझने की कोशिश करेंगे। हम प्रजाति और नृजातीयता को समझने के लिए नृजातीयता के विभिन्न सिद्धांतों की भी विस्तृत चर्चा करेंगे और यहजानेंगे कि आज की दुनिया में यह कैसे काम करता है। प्रजाति और नृजातीयता का उपयोग समाजशास्त्रीय विमर्श में सत्ता, असमानता, स्तरीकरण आदि की विभिन्न सामाजिक संरचनाओं को समझने के लिए किया जाता है। हालांकि, प्रजाति और नृजातीयता जैसी अवधारणाओं को जैविक माना जाता है, बल्कि ऐसी अवधारणाओं के गहरे अर्थ और सामाजिक निर्माण निभाते हैं। इसके अलावा, वे केवल सामाजिक निर्माण नहीं हैं, बल्कि वे विभिन्न सामाजिक समूहों की पहचान और हाशिए के निर्माण का नेतृत्व करते हैं। आइए हम उन्हें और अधिक स्पष्ट तरीके से समझने के लिए उनसे जुड़ी इन अवधारणाओं और विचारों को विस्तार से बताएं।

12.2 प्रजाति की परिभाषा

एक आम बोलचाल की भाषा में विभिन्न मनुष्यों की बाहरी शारीरिक विशेषताओं के रूप में समझा जाता है जिसका वर्गीकरण त्वचा की रंग, चेहरे की विशेषताओं, ऊँचाई आदि जैसी विशेषताओं पर निर्भर करता है। प्रजाति इस प्रकार कुछ शारीरिक विशेषताओं के कारण मानव की एक श्रेणी है जिसमे शामिल होती हैं त्वचा के रंग और अन्य चेहरे की विशेषताएं आदि । यदि हम विभिन्न महाद्वीपों और देशों के लोगों को देखते हैं, तो हम देखेंगे कि यूरोप के अधिकांश लोग काफी हद तक साफ त्वचा वाले हैं जहां अफ्रीका के लोग अक्सर काली त्वचा वाले होते हैं। त्वचा के रंग के अलावा, कुछ लोगों के घुंघराले बाल होते हैं, कुछ के बाल सीधे होते हैं, कुछ लोगों के बाल छोटे होते हैं और कुछ अपेक्षाकृत लम्बे होते हैं। इसी तरह, हम नाक, होंठ, आदि के आकार और उसमें अंतर देख सकते हैं। इन भेदों पर ध्यान केंद्रित करते हुए लोगों को विभिन्न समूहों में जोड़ा जाता है जिन्हें लोकप्रिय रूप से प्रजाति के रूप में जाना जाता है, जैसे कि काकेशियान, मंगोलॉयड, नेगोरॉयड, आदि। इन श्रेणियों को जैविक माना जाता है। यह उन्हें विरासत में मिला है, इसलिए व्यापक रूप से प्रजाति को एक जैविक श्रेणी के रूप में माना जाता है। इस प्रकार, एक नस्लीय समूह को समान शारीरिक लक्षणों वाले समूह के रूप में वर्णित किया जाता है। यह एक ऐसी स्थिति है जहां एक समूह अपने बीच समान विशेषताओं को देखता है और दूसरों को अलग-अलग देखता है। इस तरह के विभाजन 18 वीं शताब्दी के दौरान मूल रूप से भौतिक मानवविज्ञानी द्वारा किए गए थे और उन्हें मानव के वैज्ञानिक वर्गीकरण के रूप में माना जाता था।

प्रजाति का विचार 18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान उभरा जब यूरोपीय देशों ने बाकी दुनिया को उपनिवेश बनाना शुरू किया। इस तरह के वर्गीकरण ने गोरों को अन्य आबादी से, साथ ही वर्चस्व और विजय पर वर्चस्व स्थापित करने में मदद की। गोरों के नृकेंद्रिकतावाद ने उन्हें शारीरिक दिखावे के संदर्भ में मनुष्यों को प्रजातियों के रूप में देखने के बजाय रोका। शारीरिक विशेषताओं के साथ-साथ अधिकांश समय व्यवहार संबंधी विशेषताओं को भी विभिन्न प्रजातियों में जोड़ा गया। फ्रेडरिक फरार ने 1866 में ''राइट्स ऑफ राइट्स'' पर व्याख्यान दिया, जहां उन्होंने लोगों को सभ्यता के आधार पर 3 समूहों में विभाजित कियाः

असभ्य : सभी अफ्रीकी, स्वदेशी लोग, रंग के लोग (चीनी के अपवाद के साथ)।

अर्द्ध असभ्य : चीनी जो एक बार बर्बर प्रकार के थे, लेकिन अब अच्छी तरह से सभ्य हैं।

सभ्य : यूरोपीय, आर्यन और सेमेटिक लोग।

जर्मन टैक्सोनोमिस्ट(वर्गीकरणविद) केरोलस लिनिअस, ने त्वचा के रंग के आधार पर मानव को चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया :

1) अमेरिकन (लाल)

2) यूरोपीय (सफेद)

3) एशियाई (पीला)

4) अफ्रीकी (काला)

उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिकी बीमार स्वभाव वाले, दब्बू, यूरोपीय गंभीर और मजबूत होते हैं, एशियाई उदासीन और लालची होते हैं, और अफ्रीकी निडर और आलसी होते हैं।

हालाँकि, प्रजाति को जैविक माना जाता है लेकिन समाजशास्त्रीय समझ में, प्रजाति को जैविक के बजाय सामाजिक निर्माण माना जाता है। कई लेखक प्रजाति को सामाजिक स्तरीकरण की श्रेणी के रूप में मानते हैं। स्मेडली (1998) का तर्क है कि 17 वीं शताब्दी तक कोई ऐतिहासिक रिकॉर्ड नहीं था कि नस्ल का विचार मौजूद था। वह आगे तर्क देते हैं कि दौड़ ''मानव पहचान का प्रमुख स्रोत'' है (स्मेडली Smedley, 1998, पृष्ठ 690)। वह ऐसा कहते हैंः "प्रजाति शब्द का उपयोग कभी-कभी मनुष्यों को अंग्रेजी भाषा में सोलहवीं शताब्दी से संदर्भित करने के लिए किया जाता था, लेकिन दास व्यापार में आबादी का उल्लेख करने के लिए शायद ही कभी इस्तेमाल किया गया था। यह एक मात्र शास्त्रीय शब्द था जैसे कि प्रकार, या यहां तक कि प्रजाति, या कुल और इसका अठारहवीं शताब्दी तक कोई स्पष्ट अर्थ नहीं था। इस काल के दौरान, अंग्रेजों को विविध आबादी के साथ व्यापक अनुभव होने लगे और धीरे-धीरे उन मनोवृत्तियों और विश्वासों को विकसित किया जो पश्चिमी इतिहास में पहले नहीं दिखाई दिए थे। यह मानव अंतर की एक नई तरह की समझ और व्याख्या को दर्शाता है।''

यूरोपीय लोगों ने अफ्रीका, एशिया और अन्य देशों के कुछ हिस्सों का औपनिवेशीकरण किया और दूसरों पर श्रेष्ठता के उनके दावे को सही ठहराया। उन्होंने धर्म, मान्यताओं और कभी विज्ञान की मदद ली। उन्होंने अश्वेतों के वर्चस्व और गोरों के अन्य अधिकारों की गुलामी को वैधता दी। गोरों की प्रजातीय श्रेष्ठता की ऐसी मान्यताएँ जो उन्हें विश्वास करती थीं कि उन्हें अन्य आबादी को उपनिवेश बनाने का अधिकार दिया गया है। प्रजातीय भेद और भौतिक विशेषताओं ने इस विचार को सामान्य कर दिया कि गोरे श्रेष्ठ हैं और अन्य मनुष्य के छोटे रूप हैं।

12.2.1 सामाजिक संरचना के रूप में प्रजाति

हालांकि यह व्यापक रूप से कई लोगों द्वारा माना जाता है कि प्रजाति एक जैविक श्रेणी है लेकिन, समाजशास्त्री, सामाजिक वैज्ञानिक और यहां तक कि जीवविज्ञानी तर्क देते हैं कि प्रजाति एक जैविक या विरासत की श्रेणी नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक संरचना है। जैसा कि हमने शुरू में ऊपर उल्लेख किया है, यह माना जाता था कि प्रजाति जैविक, ऐतिहासिक और वैज्ञानिक है लेकिन आजकल इसे एक मिथक के रूप में माना जाता है। प्रजाति और उसके आनुवांशिकी के जैविक अध्ययनों से संकेत मिलता है कि तथाकथित प्रजाति के भीतर प्रजाति के बीच की तुलना में बहुत अधिक विविधताएं पाई जाती हैं। इसका मतलब है कि प्रजाति के नाम पर लोगों को अलग करने के लिए कोई विशेष आनुवंशिक चिह्नक नहीं हैं। एक ही प्रजाति के दो लोगों में अलग-अलग प्रजातियों के लोगों की तुलना में कभी-कभी अधिक अंतर होता है। कई बार लोगों की विविधता भौगोलिक स्थानों से प्रभावित होती है। इसलिए, लोगों को वर्गीकृत करने का कोई जैविक आधार नहीं है। उनके वर्गीकरण का एक सामाजिक आधार है। इसका अपना इतिहास है और लोगों को वर्गीकृत करने की राजनीति है। प्रजातीय पहचान का निर्माण लोगों के बीच सोपान के

निर्माण की एक प्रक्रिया है, जिससे, कुछ समूह शक्ति और विशेषाधिकारों का उपभोग करते हैं। इसलिए प्रजाति के विचार का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। त्वचा में रंगद्रव्य और ष्यामता की उपस्थिति के कारण लोगों की त्वचा का रंग बदलता है।

12.2.2 प्रजातिवाद

जैसा कि इतिहासकार और अन्य विद्वान इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि मानव अफ्रीका में उत्पन्न हुआ और इतिहास के विभिन्न चरणों में विभिन्न भौगोलिक स्थानों पर चला गया। लोगों ने भौगोलिक अंतर को अपनाया और इन विशेष वातावरणों में उपयुक्त अनुकूल लक्षणों को अपनाया। इसके अलावा, लोगों के बीच इतना अंतर है कि जैविक श्रेणी पहले ही सिमट चुकी है।

18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान दुनिया के विभिन्न स्थानों में औपनिवेशिक शक्तियों ने अपने वर्चस्व को स्थापित करने के लिए प्रजातिवाद का इस्तेमाल किया। यहां तक कि उन्होंने अपने प्रजातीय वर्चस्व और मतभेदों को स्थापित करने के लिए धर्म और विज्ञान की मदद ली। डार्विन के सिद्धांत ''योग्यतम की उत्तरजीविता'' औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा उनके नरसंहार और प्रजातिवाद को सही ठहराने के लिए इस्तेमाल किया गया था। इस सिद्धांत का मतलब है कि बलवान जीवित रहेगा और कमजोर मर जाएगा। वे खुद को दूसरों की तुलना में अधिक शक्तिशाली मानते थे और इसलिए, उन्होंने सत्ता और नस्ल के अपने वर्चस्व को वैधता दी। उपनिवेशवादियों ने अश्वेतों और अन्य उपनिवेशित लोगों की अधीनता बनाने के लिए दासता के साथ-साथ बहुत से अन्य मिथकों को भी वैध बनाया। प्रजाति 'अन्यता' के निर्माण की एक प्रक्रिया है, यानी वह प्रक्रिया जिससे आप खुद को श्रेष्ठता और हीनता के मामले में अन्य लोगों से अलग करते हैं। यह भी एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से कुछ लोग हाशिए पर हैं, हावी हैं और नियंत्रित हैं। यह हमारे समाज में विभिन्न प्रकार की रूढ़ियाँ भी बनाता है। प्रजातीय वर्गीकरण को इस तथ्य को स्वीकार करने के लिए बनाया गया था कि गोरे दूसरों से श्रेष्ठ हैं और उन्होंने इसे वैधता भी दी है। इस प्रकार, प्रजाति का विचार वैज्ञानिक नहीं था, बल्कि समूहों के प्रजातिकरण की एक प्रक्रिया थी। हम कह सकते हैं कि प्रजाति एक सामाजिक निर्माण था जहां सांस्कृतिक अर्थ जुड़ा हुआ है या उस पर आरोपित है। यहां तक कि समय के साथ प्रजाति का विचार भी बदल गया है। उदाहरण के लिए, ब्राजील और अन्य देशों में, वर्ग की स्थिति रंग से अधिक महत्वपूर्ण है। यहां तक कि 'वेत प्रभुत्व वाले देशों में भी अंतर-जातीय विवाह हो रहे हैं। हालाँकि, यह बताया जा रहा है कि प्रजाति एक सामाजिक निर्माण है।

सोचिये और करिये

इंटरनेट से, स्पिलबर्ग द्वारा बनाई गई फिल्म ''शिंडलर्स लिस्ट'' डाउनलोड करें, या द्वितीय-विश्व युद्ध के दौरान सर्वनाश के शिकार के रूप में लिखित ऐनी-फ्रैंक्स डायरी पढ़ें। जब यहूदियों को जर्मनी में मार दिया गया था। कम से कम दो पृष्ठों में ''प्रजातिवाद'' पर एक निबंध लिखें और अपने अध्ययन केंद्र में अन्य छात्रों के साथ चर्चा करें।

बोध प्रश्न 1

नोट : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दी गई जगह का उपयोग करें।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर के साथ अपने उत्तरों की जांच करें।

1) लगभग 10 लाइनों में प्रजाति की अवधारणा को परिभाषितकरें और उस पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रजातिवाद से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

12.3 नृजातीय समूह और नृजातीयता

सरल भाषा में नृजातीयता किसी व्यक्ति या समूह के नृजातीय समूह की अपनेपन की भावना है। एक व्यक्ति या समूह, वे विभिन्न सांस्कृतिक लक्षणों के कारण स्वयं को/खुद को एक विशेष जातीय समूह से कैसे संबंधित करते हैं, इसे नृजातीयता कहा जाता है। इसलिए, नृजातीयता जैविक की तुलना में अधिक सांस्कृतिक है। हालांकि, जातीय समूह और नृजातीयता के विचार पर बहसें होती हैं क्योंकि कुछ विद्वानों का मानना है कि नृजातीयता स्वाभाविक है और कुछ विद्वानों का मानना है कि यह एक सामाजिक निर्माण है। इसलिए आइए हम नृजातीयता और नृजातीय समूह के विचार को विस्तृत करें।

12.3.1 नृजातीय समूहः परिभाषा और विशेषताएं

एक नृजातीय समूह को उसके वंश के संदर्भ में सबसे अच्छा समझा जाता है, यानी समूह के सदस्य अपने आप को किसी विशेष पौराणिक चरित्र या मिथक से कैसे संबंधित करते हैं, इसकी उत्पत्ति कैसे हुई? इस प्रकार सदस्यों के बीच यह एक आम धारणा है कि वे एक विशेष पौराणिक चरित्र या इसी तरह के मूल के वंशज हैं। जैसे, सामूहिकता के संदर्भ में नृजातीय समूह को सबसे अच्छा समझा जाता है - समूह का सदस्य होना। सामूहिकता रक्त संबंध, भाषा, संस्कृति, नातेदारी संबंध, धर्म आदि के संबंधों से हो सकती है।

हचिंसन और स्मिथ एक नृजातीय समूह की छह विशिष्ट विशेषताओं पर विचार करते हैंः

i) समुदाय का ''लक्षण'' पहचानने और व्यक्त करने के लिए एक सामान्य उचित नाम;

ii) सामान्य वंश का एक मिथक जिसमें समय और स्थान पर सामान्य उत्पत्ति का विचार शामिल है और जो एक नृजातीय को काल्पनिक नातेदारी की भावना देता है;

iii) ऐतिहासिक यादों को साझा किया, या बेहतर, एक सामान्य अतीत या अतीत की यादों को साझा किया, जिसमें नायक, घटनाएं और उनकी स्मरणोत्सव शामिल हैं;

iv) सामान्य संस्कृति के एक या अधिक तत्व, जिन्हें निर्दिष्ट करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन सामान्य रूप से धर्म, रीति-रिवाज और भाषा शामिल हैं;

v) मातृभूमि के साथ एक कड़ी, जरूरी नहीं कि उसका भौतिक व्यवसाय और पैतृक भूमि, जैसा कि प्रवासी लोगों और

vi) नृजातीय आबादी के कम से कम कुछ वर्गों की ओर से एकजुटता की भावना (हचिंसन और स्मिथ 1996, 6-7) ।

बॉक्स 12.0

नृजातीयता की उत्पत्ति और पुनरुत्थान अंतर समूह संपर्क में निहित है, अर्थात, जब विभिन्न समूह एक दूसरे के प्रभाव क्षेत्र में आते हैं। बेशक, जो आकार लेता है, वह उस समाज की स्थितियों पर निर्भर करता है। दूसरा बिंदु यह है कि नृजातीयता का उपयोग उत्पीड़ित समूहों के लिए अस्तित्व की वर्तमान मांगों को पूरा करने के लिए किया जाता है। जब अधीनस्थ समूहों को दूसरों के प्रभुत्व को सहन करना मुश्किल हो जाता है और अपनी स्थिति को सुधारने के लिए प्रयास करना पड़ता है, तो नृजातीयता उत्पन्न होती है।

दूसरी ओर शर्मनहॉर्न (Schermerhorn) एक नृजातीय समूह की सामग्री को समझने के लिए 'नृजातीय समुदाय' या एथ्नी 'ethnie' का वर्णन करता है। उनका मानना है, ''यहां एक नृजातीय समूह को एक बड़े समाज के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसमें वास्तविक या सांकेतिक सामान्य वंशावली, एक साझा ऐतिहासिक अतीत की यादें और एक या एक से अधिक प्रतीकात्मक तत्वों पर सांस्कृतिक ध्यान केंद्रित किया जाता है। ऐसे प्रतीकात्मक तत्वों के उदाहरण हैं : नातेदारी प्रतिमान, भौतिक संदर्भ (एक स्थानीयता या संप्रदायवाद के रूप में), धार्मिक संबद्धता, भाषा या बोली के रूप, आदिवासी संबद्धता, राष्ट्रीयता, उपशास्त्रीय विशेषताएं, या इनमें से कोई संयोजन। एक आवश्यक संगति समूह के सदस्यों के बीच किसी प्रकार की चेतना है" (शर्मनहॉर्न 1978, 17)।

इस प्रकार, शर्मनहॉर्न विभिन्न तत्वों में दिखता है जो एक नृजातीय समूह बनाते हैं। ऐसे तत्वनातेदारी, भाषा, धर्म आदि हैं।

एंथनी डी स्मिथ ने नृजातीयता (नृजातीय समुदायों) को ''एक नामित मानव आबादी के साथ साझा वंश, मिथक, इतिहास और संस्कृतियों के रूप में परिभाषित किया है, जिसमें एक विशिष्ट क्षेत्र और एकजुटता की भावना है'' (स्मिथ 1986: 32)। यहां, स्मिथ एक समूह के नृजातीय-प्रतीकात्मक महत्व को संदर्भित करता है, जहां साझा अतीत और इतिहास समूह के सदस्यों को बांधता है।

शास्त्रीय नृविज्ञानियों ने एक नृजातीय समूह की कुछ विशेषताएं दी हैं, जैसा कि नीचे दिया गया है:

- यह काफी हद तक जैविक रूप से आत्म-स्थायी है।
- मौलिक सांस्कृतिक मूल्यों को साझा करता है, जो सांस्कृतिक रूपों में प्रत्यक्ष एकता से उत्पन्न होता है।
- यह संचार और अन्तःक्रिया का एक क्षेत्र बनाता है ।
- इसकी एक सदस्यता है जो खुद को पहचानती है, और दूसरों द्वारा पहचानी जाती है, एक ही क्रम के अन्य श्रेणियों से अलग एक निरंतर श्रेणी के रूप में। (नैरोल 1964, बर्थ 1969, 12-13 में उद्धृत)

फरेड्रिक बर्थ ने हालांकि, जातीय समूह के अपने विश्लेषण में जातीय समूह को समझने के लिए सीमा के विचार को जोड़ा। उनका मानना है कि यह सांस्कृतिक चिह्नक नहीं है जो

एक समूह को विशिष्ट बनाता है बल्कि सीमा उसे अलग बनाता है। उन्होंने कहा कि ''नृजातीय सीमा जो समूह को परिभाषित करती है, न कि सांस्कृतिक सामग्री जो इसे साथ रखती है'' (बर्थ 1969, 15)। वह आगे कहते हैं कि सामाजिक अन्तःक्रिया एक समूह को विशिष्ट बनाते हैं। आम धारणा या आत्मपरक समझ के अनुसार सांस्कृतिक चिह्नक जो एक समूह को विशिष्ट बनाती है बार्थ द्वारा प्रतिस्थापित करते हुए कहती है कि सीमाओं का संसाधन एक समूह को अन्य समूहों से अलग करता है। जैसे, नृजातीयता बड़े पैमाने पर अन्य समूहों के साथ सामाजिक संबंधों पर आधारित है। नृजातीय सीमाएँ इसलिए सामाजिक क्रिया के उत्पाद हैं। सामाजिक संपर्क अन्य समूहों के संबंध में एक समूह का भेद पैदा करते हैं। एरिकसन का मानना है कि "समूह की पहचान को हमेशा उसी के संबंध में परिभाषित किया जाना चाहिए जो वे नहीं हैं। दूसरे शब्दों में, पहचान को समूह के गैर-सदस्यों के संबंधाके रूप में परिभाषित किया गया है' (एरिकसन, 1993: 10)। नृजातीय समूहों को अन्य समूहों के साथ सांस्कृतिक अंतर के साथ समझा जाता है। नृजातीय समूह अलगाव में नहीं पाए जाते हैं, बल्कि अन्य समूहों के संबंध में पाए जाते हैं।

बॉक्स 12.1

प्रशासन में उच्च पदों की आकांक्षा रखने वालों ने खुद को फारसी और इसके बाद के संस्करण उर्दू से लैस किया, राष्ट्रवादी अपनी देशवादी और देशभक्ति की जरूरतों के अनुरूप क्षेत्रीय बोलियों और भाषाओं में समृद्ध साहित्य उत्पन्न किए। प्रत्येक नृजातीय समूह की समृद्ध सांस्कृतिक और भाषाई विरासत की रक्षा के लिए मौखिक परंपरा सबसे महत्वपूर्ण उपकरण बन गई। प्राच्यवादी (ओरिएंटलिस्ट) मानते हैं कि मूल भारत की भाषाओं में उपलब्ध साहित्य अंग्रेजी भाषा की उपज है, जो आज दुनिया के बसेरे में सबसे ज्यादा राज करता है। आधुनिकीकरण और राजनीतिक सशक्तीकरण के माध्यम से अंग्रेजी ने एक सदिष के रूप में भारतीय सांस्कृतिक ताने-बाने में अपना मार्ग बनाया। स्वतंत्रता के बाद की अवधि में, इसे शक्तिशाली और समृद्ध भाषा के रूप में पेश किया जाने लगा, इसने भाषायी दंगों के शुरुआती दौर में भी प्राकृतिक स्वीकृति प्राप्त की।

12.3.2 नृजातीयता

जैसा कि हमने ऊपर उल्लेख किया है, नृजातीयता किसी विशेष जातीय समूह के व्यक्ति या समूह की अपनेपन की भावना है। इस समूह के एक व्यक्ति के रूप में आप सांस्कृतिक चिह्नों को साझा करते हैं जो आपके समूह को दूसरों से अलग बनाते हैं। इसलिए, उसकी/उसके समूह पहचान की भावना को नृजातीयता कहा जाता है। एरिकसन ने नृजातीयता को ''उन अभिकर्त्ताओं के मध्य सामाजिक संबंधों के एक पहलू के रूप में परिभाषित किया है जो खुद को अन्य समूहों के सदस्यों से सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट मानते हैं जिनके साथ वे नियमित रूप से अन्तःक्रिया करते हैं। नृजातीयता का पहला तथ्य अंदरूनी और बाहरी लोगों के बीच या 'हमारे' और 'उनके' के बीच व्यवस्थित अंतर का अनुप्रयोग है। यदि ऐसा कोई सिद्धांत मौजूद नहीं है, तो कोई नृजातीयता नहीं हो सकती है" (एरिकसन 2002, 12-19)।

12.4 नृजातीयता के सिद्धान्त

सामाजिक विज्ञान के विमर्श में नृजातीयता का विश्लेषण करने के लिए विचार के तीन संप्रदाय हैं। ये हैं :

1) विचार का आदिमवादी संप्रदाय

2) उपकरणवादी संप्रदाय, और

3) विचार का स्थितिजन्य आदिमवादी संप्रदाय।

विचार के पहले दो स्कूल यानी आदिमवादी और उपकरणवादी नृजातीयता के गठन पर ध्रुवीय विपरीत विचार रखते हैं। स्थितिजन्य आदिमवादी दृष्टिकोण ने इन दोनों विचारों से तत्वों को लिया है। आदिमवादियों का मानना है कि नृजातीयता एक दी गई श्रेणी है और किसी की नृजातीयता को नहीं बदला जा सकता है। उपकरणवादियों का तर्क है कि नृजातीयता एक समुदाय के अभिजात वर्ग द्वारा निर्मित एक निर्माण है, और यह एक सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक निर्माण है। आइए हम नृजातीयता पर इन तीन प्रकार के विचारों पर अलग से चर्चा करें।

12.4.1 विचार का आदिमवादी संप्रदाय

आदिमवादी विचारधारा का मानना है कि निजातीयता जन्मजात है, अर्थात् नृजातीयता व्यक्तियों और समुदाय की निर्धारित या दी गई विशेषता है। यह मानता है कि नृजातीयता आरोपित है। यह जन्म के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। यह स्थायी है और इसे बदला नहीं जा सकता। नृजातीयता या नृजातीय पहचान एक समूह के प्रति उसकी प्रधानता के साथ जाती है। शिल्स (Shils), ग्लेजर (Glazer), मोनीहन (Moynihan), रेक्स (Rex), विचार के इस संप्रदाय से जुड़े कुछ विद्वान हैं जो मानते हैं कि नृजातीयता एक मौलिक घटना है। उनके लिए, नृजातीयता ''वस्तुनिष्ठ सांस्कृतिक और क्षेत्रीय मानदंडों के आधार पर साझा पहचान की भावना है'' (फडनीस और गांगुली 2003, 23)।

अमेरिकी समाजशास्त्री एडवर्ड शिल्स ने 1957 में ''प्राइमर्डियल, पर्सनल, सैक्रेड एंड सिविल टाईजःसम पर्टिकुलर ओब्जर्वेशंस ऑन द रिलेशनशिप ऑफ सोशियोलॉजिकल रिसर्च'' के बारे में अपने निबंध में आदिमताता के विचार को विकसित किया। उन्होंने आधुनिक समाज में सदस्यों के बीच विभिन्न प्रकार के सामाजिक बंधनों का अवलोकन किया। शिल्स ने आधुनिक समाजों में सार्वजनिक नागरिक संबंधों के साथ-साथ परिवार, धर्म और जातीय समूहों में विद्यमान आदिम संबंधों की जांच की। इस तरह के संबंधों में प्रतीकों और समारोहों या अवसरों के संबंधों की अभिव्यक्ति होती है। (शिल्स 1957, 130-145)। शिल्स के लिए, विभिन्न मौलिक संबंध वास्तविक या काल्पनिक हो सकते हैं, लेकिन जो महत्वपूर्ण है, वह यह है कि यह समुदाय को उसके ऐतिहासिक मूल से संबंधित करता है। इसी प्रकार, नातेदारी संबंध सदस्यों को एक सामान्य पूर्वज से बांधते हैं। आधुनिक समाजों में भी इस प्रकार के आदिकालीन संबंध मौजूद हैं। इसके अलावा, शिल्स यह भी कहते हैं कि सदस्यों द्वारा साझा की जाने वाली संस्कृति को स्वाभाविक रूप से दिया गया माना जा सकता है। इस प्रकार, नृजातीय बंधन प्राकृतिक और प्रदत्त हैं। उन्हें अर्जित नहीं किया जा सकता है। नतीजतन, आदिमवाद नातेदारी और वंश के संदर्भ में एक समुदाय की पहचान बनाने का अवसर देता है।

आदिमवाद के विचार को अमेरिकी नषविज्ञानी, क्लिफर्ड गीर्ट्ज ने और विकसित किया था। उन्होंने कहा किः

''आदिकालिक लगाव का अर्थ कुछ 'प्रदत्त' है- इस तरह के जुड़ावों में संस्कृति अनिवार्य रूप से शामिल होती है। सामाजिक अस्तित्व को एक विशेष धार्मिक समुदाय में जन्म लेने से उपजी 'प्रदत्तता' के विचार के सान्निध्य और नातेदारी सम्बन्धों के साथदिया जाता है, या यहां तक कि एक भाषा की एक बोली, और विशेष सामाजिक व्यवहारों का पालन करने से।

ये सान्निध्य रक्त, भाषा, रिवाज, और इसी तरह के पहचान अपरिहार्य माने जाते हैं। सामाजिक अस्तित्व, कुछ हद तक बाध्यता के साथ जन्मजात और प्रदत्त होते हैं। आदिम संलग्नता पहचान को आकार देता है (गीर्ट्ज, 1964, 259-60)

इस प्रकार विचार का आदिम संप्रदाय, नृजातीय बंधन आदिम, प्राचीन, प्राकृतिक, भावनात्मक और प्रदत्त दिखता है। इस प्रकार, नृजातीयता को सतत और प्रकृतिवादी माना जाता है। लेकिन आदिमवादियों के साथ प्रमुख समस्या यह है कि वे विभिन्न प्रकार की पहचानों के बारे में समझाने में असफल रहे हैं जो काल के विभिन्न बिंदुओं पर उभरे हैं। इसी तरह कई तरह की पहचान भी क्षरित या बदल जाती है। वे पहचान के गतिशील चरित्र और अब पहचान के आधार को ध्यान में नहीं रखते हैं।

12.4.2 विचार का उपकरणवादी संप्रदाय

उपकरणवादी नृजातीयता को आदिम गुणों के संदर्भ में नहीं देखते हैं अपितु वे नृजातीयता को समय के साथ सामाजिक और राजनीतिक रूप से निर्मित मानते हैं। नृजातीयता कुछ लक्ष्यों को प्राप्त करने में एक आवश्यक साधन है। उपकरणवादी विभिन्न नृजातीय समूहों के लिए नृजातीयता को सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संसाधन मानते हैं। पॉल ब्रास, टेड गूर और अबनेर कोहेन कुछ विद्वान हैं जो इस विचारधारा से संबन्धित हैं।

जैसा कि उल्लेख किया गया है, उपकरणवादियों के लिए, नृजातीयता एक निर्माण है, जो समूह के कुछ हितों के लिए एक विशेष समूह के कुलीनों द्वारा निर्मित है। चूंकि, नृजातीयता एक निर्माण है, समय के साथ नृजातीय सीमाएं लचीली और बदलती रहती हैं।

पॉल ब्रास का तर्क है कि-

"सांस्कृतिक रूप, मूल्य और नृजातीय समूहों के व्यवहार राजनीतिक शक्ति और आर्थिक लाभ के लिए प्रतिस्पर्धा में कुलीनों के लिए राजनीतिक संसाधन बन जाते हैं। वे समूह के सदस्यों की पहचान के लिए प्रतीक और संदर्भ बन जाते हैं, जिन्हें राजनीतिक पहचान बनाने के लिए और अधिक आसानी से याद किया जाता है। एक राजनीतिक पहचान बनाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले प्रतीकों को भी राजनीतिक परिस्थितियों और राज्य अधिकारियों द्वारा लगाए गए सीमाओं को समायोजित करने के लिए स्थानांतरित किया जा सकता है" (ब्रास,1991, 15)।

इस प्रकार ब्रास का तर्क है कि नृजातीयता का निर्माण एक समूह के कुलीन वर्ग द्वारा किया जाता है। इस तरह के निर्माण के पीछे प्रमुख उद्देश्य राजनीतिक और आर्थिक दोनों तरह के राज्य संसाधनों को साझा करना या उन पर अधिकार करना है। वह बताते हैं कि कुलीन लोग सांस्कृतिक साधनों का चयन करते हैं और समूहों की नृजातीयता को परिभाषित करते हैं। वे कहते हैं, ''नृजातीय समूहों के भीतर अभिजात वर्ग और विरोधी-समूहकी संस्कृति के पहलुओं का चयन करते हैं, उनके लिए नए मूल्य और अर्थ जोड़ते हैं, और उन्हें अपने हितों की रक्षा करने के लिए, और अन्य समूहों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए, समूह को जुटाने के प्रतीक के रूप में उपयोग करते हैं (1979) : 40-41)। अपने दावे के समर्थन में कि नृजातीयता एक निर्माण है, ब्रास बताते हैं कि ''यह स्पष्ट है कि आज दुनिया में कम सदस्य हैं जिनके सदस्य किसी ज्ञात सामान्य मूल के लिए कोई गंभीर दावा कर सकते हैं, यह वास्तविक वंश नहीं है जिसे माना जाता है एक नृजातीय समूह की परिभाषा के लिए आवश्यक है लेकिन एक आम वंश में एक विश्वास है'' (पूर्वोक्त, 70)।

12.4.3 स्थिति–जन्य आदिमवादी दृष्टिकोण

स्थितिजन्य-प्रधानतावादी दृष्टिकोण नृजातीयता के विचार के दोनों संप्रदायों की जांच करता है। इस दृष्टिकोण का दावा है कि आदिमवादी और उपकरणवादी दृष्टिकोण कई सवाल उठाते हैं, लेकिन वर्तमान वैश्विक परिदृष्य में उनका जवाब नहीं देते हैं। कार्स्टन विलैंड अपने स्थितिजन्य-आदिमवादी दृष्टिकोण में अन्य दो दृष्टिकोणों की आलोचना करते हैं जो उससे सहमत हैं। यह उल्लेख किया जाना चाहिए कि उपरोक्त दो दृष्टिकोण कुछ बिंदुओं में सहमत हैं कि नृजातीयता समूह गठन की एक प्रक्रिया है। आदिमवादी नृजातीयता को प्रदत्त, स्वाभाविक और उद्देश्य के रूप में मानते हैं और इसलिए नृजातीय समूह एक ठोस इकाई है, लेकिन विलैंड अपने दृष्टिकोण में नृजातीयता को तुलनात्मक राजनीति में एक स्वतंत्र चर के रूप में लेते हैं। उनके अनुसार, नृजातीय कारक स्वतंत्र रूप से राजनीतिक परिणामों को प्रभावित करते हैं (पूर्वोक्त, 18)।

दूसरी ओर उपकरणवादी दृष्टिकोण नृजातीयता का निर्माण मानता है। यह व्यक्तिपरक और लचीला है और इसका निर्माण किसी समुदाय के अभिजात वर्ग द्वारा किया जाता है। नृजातीय समूह भी एक रुचि समूह है, लेकिन विलैंड का मानना है कि एक नृजातीय समूह और नृजातीयता बाहरी प्रभावों के उत्पाद हैं, और इसलिए, वे आश्रित चर हैं, लेकिन जैसे ही वे बनते हैं, वे स्वतंत्र रूप से निर्णयलेने वाली प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं।

इन दोनों दृष्टिकोणों की आलोचना करते हुए, विलैंड का तर्क है कि जैसे ही आदिमवादी नृजातीय समूहों को प्राकृतिक और नृजातीय पहचान को स्थिर करते हैं, वे अपनी मान्यताओं को साबित नहीं करते हैं। वे यह बताने में असमर्थ हैं कि कुछ जातीय समूह क्यों क्षीण होते हैं, कुछ फिर से प्रकट होते हैं, कुछ विलय करते हैं और अब कैसे नई पहचान बनाते हैं। वे यह भी स्पष्ट नहीं कर पा रहे हैं कि कुछ नृजातीय विशेषताएँ दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण क्यों हैं और कुछ नृजातीय समूह एक-दूसरे से लड़ते क्यों हैं और अन्य सहयोग क्यों करते हैं। विलैंड ने उपकरणवादियों की भी आलोचना की है क्योंकि वे यह नहीं समझाते हैं कि नृजातीयता सामाजिक-राजनीतिक रूप से कैसे बनाई जाती है और नृजातीयता के भीतर कौन सा बल काम कर रहा है कि लोगों को नृजातीय कारक के आधार पर एकजुट किए जा सकते हैं और वे अपनी संस्कृति और नृजातीय आधार के लिए मरने के लिए तैयार हो सकते हैं (पूर्वोक्त, 20) विलैंड ने नृजातीयता के लिए आदिमकालीन और उपकरणवादी दृष्टिकोण की आलोचना की है। उन्होंने अपने स्वयं के स्थितिजन्य-आदिम दृष्टिकोण को विकसित किया है। विलैंड (Wieland) का तर्क है कि नृजातीयता एक आश्रित और स्वतंत्र चर है जैसा कि ऊपर बताया गया है। उनका तर्क है कि नृजातीयता एक आधुनिक आविश्कार है। नृजातीय समूहों के गठन में चयनात्मक सांस्कृतिक सामग्री का उपयोग इसमें बल उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। उनका तर्क है कि नृजातीयता के निर्माण के लिए कुछ मौलिक गुणों का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार, यह प्राथमिकता पर निर्भर हो जाता है, लेकिन यह समाज को अपनी मौलिक उत्पत्ति से स्वतंत्र प्रभावित करता है।

सोचिए और करिए 2

अपने परिवार के सदस्यों के साथ चर्चा करें और पड़ोसी या दोस्त भारत के किस हिस्से से आए थे। एक सामाजिक समूह के रूप में कैसे अन्तःक्रिया करते हैं।

''पहचान और विश्वास'' पर एक पृष्ठ लिखें और अपने दोस्तों के साथ इस विषय पर अपने विचारों को साझा करें।

12.5 प्रजाति और नृजातीयता में अंतर

हमने देखा है कि प्रजाति और नृजातीयता सामाजिक विज्ञान के विमर्श में इस्तेमाल की जाने वाली दोअलग अलग अवधारणाएँ हैं। कई बार दोनों शब्दों का परस्पर प्रयोग किया जाता है लेकिन उनके बीच कुछ स्पष्ट भेद पाए जाते हैं। हालांकि, दोनों को प्रजाति की समझ के लिए जीवविज्ञान या भौतिक विशेषताओं के रूप में एकमहत्वपूर्ण सामाजिक निर्माण माना जाता है, नृजातीयता को समझने में सांस्कृतिक चिह्नक महत्वपूर्ण हैं। प्रजाति भौतिक विशेषताओं पर आधारित है जबकि नृजातीयता सांस्कृतिक लक्षणों पर आधारित है। नृजातीयता को एक समूह के सदस्यों की साझा संस्कृति, इतिहास, वंश, आदि द्वारा परिभाषित किया जाता है। दूसरी ओर प्रजाति को साझा भौतिक लक्षणों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

बोध प्रश्न 2

नोट : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दी गई जगह का उपयोग करें

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर के साथ अपने उत्तरों की जांच करें

1) नृजातीयता क्या है और इसकी प्रमुख विशेषताएं क्या हैं

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) अपने स्वयं के शब्दों में नृजातीयता के प्रमुख सिद्धांतों में से एक पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

12.6 सारांश

उपरोक्त चर्चा से हमने सीखा कि प्रजाति और नृजातीयता दो अलग-अलग सामाजिक निर्माण हैं। 18 वीं और 19 वीं सदी के औपनिवेशिक नषविज्ञान और विज्ञान ने शारीरिक भेदभाव जैसे त्वचा के रंग, चेहरे या शारीरिक अंतर से अलग लोगों को बनाने के लिए प्रजाति का विचार बनाया। प्रजातीय वर्गीकरण का उपयोग प्रजाति के बीच पदानुक्रम बनाने के लिए किया गया था क्योंकि यह औपनिवेशिक शक्तियों के हित में काम करता था।

उन्होंने प्रजाति के आधार पर अपने शासन को वैध बनाया। प्रजातीयता का विचार उन लोगों के समूह का विचार है जो मानते हैं कि एक ही सांस्कृतिक मूल, सांस्कृतिक समानता, एक ही भाषा और धर्म, आदि हैं, हालांकि, प्रजाति और नृजातीयता स्वाभाविक लगती है, लेकिन हमने अपनी चर्चा से सीखा है कि वे दो अलग-अलग सामाजिक निर्माण हैं।

12.7 संदर्भ

Barth, Fredrik, ed. 1969. *Ethnic Groups and Boundaries; The Social Organization of Cultural Difference*. London: George Allen & Unwin.

Brass, Paul R. 1991. *Ethnicity and Nationalism: Theory and Comparison*. New Delhi: Sage Publication.

Eriksen, Thomas Hylland. 2002. *Ethnicity and Nationalism: Anthropological Perspectives*. London: Pluto Press.

Geertz, Clifford. 1964. *Old Societies and New States: The Quest for Modernity in Asia and Africa*. Glencoe: Free Press.

Hutchiman, John and Anthony Smith. 1996. *Ethnicity*. New York: Oxford University Press.

Phadnis, Urmila and Rajat Ganguly. 2001. *Ethnicity and Nation Building in South Asia*. New Delhi: Sage Publishers.

Schemerhon, Richard. 1978. 'Ethnicity'. Hutchinson, John and Anthony D Smith Smith. *Ethnicity*. Newyork: Oxford university Press.

Smith, Anthony. 1986. *Ethnic Origins of Nation* . New York: Basil Blackwell.

Smedley, Audrey. 1998. "Race" and the Construction of Human Identity".

American Anthropologist. Vol. 100, No. 3 Sep. 690-702.

12.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) प्रजाति को आमतौर पर दुनिया के विभिन्न हिस्सों से विभिन्न लोगों की बाहरी शारीरिक विशेषताओं के रूप में समझा जाता है; जैसे, गोरे रंग के यूरोपियन, काले, अफ्रीका के नीग्रो, मैंगोलॉर्ड, जो पीले रंग के एशिया के लोगों की शिकायत करते हैं, इत्यादि। यह 18 वीं शताब्दी के दौरान भौतिक मानवविदों द्वारा परिभाषित किया गया था शारीरिक विशेषताओं के आधार पर यह उनके साथ कुछ मानसिक विशेषताओं को संबद्ध करने के लिए भी था। इस प्रकार 1866 में फर्रार ने मानव जातियों को तीन समूहों में विभाजित किया - सावेज, अर्ध-सैवेज और नस्लों की सभ्यता।

2) प्रजातिवाद वह ऐतिहासिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम 18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान औपनिवेशिक शक्तियों ने अपने वर्चस्व को स्थापित करने के लिए इसका इस्तेमाल किया। उन्होंने अपने वर्चस्व को वैध बनाने के लिए कभी-कभी धर्म और विज्ञान का भी इस्तेमाल कियाय जैसे डार्विन का सिद्धांत 'प्राकृतिक चयन' और 'योग्यतम की उत्तरजीविता' औपनिवेशिक नियमों द्वारा कुछ व्याख्याएँ उपयोग किए गए थे। इस प्रकार, प्रजातिवाद समाज में सामाजिक स्तरीकरण का हिस्सा है।

बोध प्रश्न 2

1) नृजातीयता कुछ सांस्कृतिक लक्षणों के आधार पर एक निश्चित समूह से संबंधित या अपनेपन की भावना है। यह एक जैविक विशेषता के बजाय एक सांस्कृतिक है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ किसी स्थान से संबंधित या किसी पूर्वज के किसी पौराणिक पूर्वज की खोज से संबंधित कुछ ऐतिहासिक यादों पर आधारित हैं। नृजातीयता यह है कि कैसे लोग रक्त के आधार पर इस समूह से संबंधित होते हैं यानी पूर्वजों, साझा धर्म, भाषा, संस्कृति, नातेदारी संबंध आदि।

29) नृजातीयता के तीन सिद्धांतों में से एक विचार का आदिमवादी संप्रदाय है। इसके समर्थकों का मानना है कि नृजातीयता जन्मजात है, यह व्यक्तियों और समुदाय की एक विशेषता है। विचार का यह संप्रदाय मानता है कि नृजातीयता आरोपित है यानी आप एक सामाजिक समूह में पैदा हुए हैं जिसे आप बदल नहीं सकते। इसके मुख्य प्रस्तावक एडवर्ड शिल्स (1957) हैं; ग्लेजर, मोयनिहाऊ आदि।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY